प्रसार कार्यकर्त्ता के लिए ग्रामीण समाजशास्त्र का महत्त्व
(Importance of Rural Sociology for Extension Workers)

ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्रामीण समाज का विज्ञान है । यह शास्त्र ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले तरह-तरह के समूह का वर्णन और विश्लेषण करता है । इसके साथ ही, यह भी कहा जा सकता है कि "Indian sociology is village sociology." हम जानते हैं कि प्रसार का लक्ष्य ग्रामीणों का, एक व्यक्ति के रूप में, और एक समूह के रूप में, चहुमुखी विकास करना है । इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रसार कार्यकर्त्ता को, ग्रामीणों और उनके समाज में वांछित परिवर्त्तन लाने का प्रयास करना जरूरी है । रेड्डी ने लिखा है , "To bring about required changes in rural society consciously, the rural worker need to know the laws of the structure and development of rural society in general, which is otherwise known as rural sociology."

प्रसार कार्य ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों के विकास के लिए चलाए जाते हैं । सरकार ने इनके विकास के महत्त्व को समझा है क्योंकि उनकी आबादी और क्षेत्र सम्पूर्ण देश की आबादी के संदर्भ में बहुत अधिक है । प्रसार कार्य तो इन्हीं के लिए और इन्हीं के बीच चलाने हैं । अतः ग्रामीणों की सामाजिक संरचना , उनके तौर-तरीके, उनकी प्रथाओं और परम्पराओं, उनके रहन-सहन, उनकी मनोवृत्ति आदि तथा उनके जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों की जानकारी नितान्त जरूरी है । प्रसार में परिवर्त्तन की गति को, इनके अनुरूप रखा जाना जरूरी है अन्यथा सम्पूर्ण कार्यक्रम असफल हो जा सकता है ।

ग्रामीण समाजशास्त्र की जानकारी से प्रसार कार्यकर्त्ता , ग्रामीण समाज के अवगुणों (ills of rural society) की सही पहचान (correct diagnosis) कर सकता है । यह जानने के

Scanned with CamScanner

बाद, वह एक सही नुस्खा खोज निकाल सकता है अर्थात ऐसा प्रोग्राम तैयार कर सकता है जिससे इन अवगुणों को पराभूत (overcome) किया जा सकता है । ग्रामीण पुनर्निर्माण के काम के लिए और विकास के लिए, इस पक्ष की जानकारी उतनी ही जरूरी है जितनी कि डाक्टर के लिए, औषधि विज्ञान का जानना जरूरी है । प्रसार कार्यकर्त्ता के लिए ग्रामीणों के विषय में जानकारी के महत्त्व को दर्शाने में एक अँगरेजी कहावत बिल्कुल फिट बैठती है, "To teach John Latin , it is necessary , not only to know Latin but also to know John" जिन लोगों तक विकास को पहुँचाना है उन तक अपनी बात पहुँचाने के लिए, उनके व्यक्तिगत और पारिस्थितिक कारकों (personal and situational factors) को भी ध्यान में रखना जरूरी है । रेड्डी ने इसे इस प्रकार समझाने का प्रयास किया है, "The captain of a ship has to know, not only his ship and the destination, but he must also understand, ocean, its currents and tides, and the wind system of the world as all these are powerful forces , which can help him , on his way, or can wreck his ship . The extension worker needs to understand, not only his own programme and objectives , but also the current of thoughts in the minds of the people , with whom he lives and works, also he needs to understand their motives and capacities." ग्रामीण समाजशास्त्र का अध्ययन प्रसार कार्यकर्त्ता के लिए कई कारणों से महत्त्वपूर्ण है ।

प्रसार कार्य के लिए, ग्रामीण समाजशास्त्र के महत्व के प्रमुख कारण

(1) ग्रामीण समाजशास्त्र में ग्रामीण संगठन के नियमों का और ग्रामीण समाज के विकास का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है । प्रसार शिक्षा एक अनौपचारिक शिक्षा है जो ग्रामीणों को, लक्षित धारा में लाने के लिए, वांछित दिशा में विकास के लिए प्रेरित करके, उनका विकास करने का उद्देश्य लेकर चलती है ।

(2) ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीणों की मनोवृत्ति और व्यवहार का अध्ययन करता है । प्रसार शिक्षा उनकी मनोवृत्ति और व्यवहार को, उन्हीं की बेहतरी (betterment) के लिए, परिवर्त्तित करने का प्रयास करती है ।

(3) ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्रामीण समाज की , जरूरतों और रुचियों (needs and interests) का अध्ययन करता है । प्रसार शिक्षा ग्रामीणों को अपनी जरूरतों और समस्याओं को समझने और उनका पता लगाने में मदद करती है । प्रसार शिक्षा ऐसे शिक्षात्मक कार्यक्रम बनाती है जो ग्रामीणों की जरूरतों और उनकी समस्याओं पर आधारित रहते हैं ।

(4) ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्रामीण सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है । यह सामाजिक प्रक्रियाओं , जैसे — सहयोग, संगठन, स्पर्धा, सहकारिता, आदि का भी अध्ययन करता है । प्रसार शिक्षा ग्रामीणों की इन सब प्रबल मनोभावनाओं का लाभ उठाकर, उनमें विकास-कार्यों को बढ़ाने के लिए और उनका सहयोग प्राप्त करने के लिए, विविध कार्यक्रमों का आयोजन करती है और सबके सम्मिलित प्रयास से ग्रामीण क्षेत्र को विकास की ओर उन्मुख करती है ।

(5) ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्रामीणों की अपने लोगों पर ही , अटूट विश्वास की मनोवृत्ति का अध्ययन करता है । प्रसार शिक्षा उनकी इस मनोवृत्ति का लाभ उठाती है ।उन्हीं में से किसी व्यक्ति को उनका पथ-प्रदर्शक बना कर, उसी के माध्यम से विकास कार्यों को आगे बढ़ाती है

Scanned with CamScanner

क्योंकि वे अपने में ही के, किसी व्यक्ति पर सहज ही पूर्ण विश्वास करके, अपना सहयोग देते हैं और परिवर्त्तन के लिए, उसी के कहने से राजी होते हैं ।

(6) ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्रामीण सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन करता है तथा सामाजिक तथ्यों को एकत्र करता है । प्रसार शिक्षा इन संग्रहीत आँकड़ों के आधार पर ग्रामीण, क्षेत्र के विकास के कार्यक्रमों को, आयोजित और क्रियान्वित करती है ।

(7) ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्रामीणों की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा धर्म-कर्म सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन व्यापक रूप से करता है । प्रसार शिक्षा को इस जानकारी से अत्यधिक लाभ होता है । क्योंकि इन पक्षों को जानने के बाद ही, समझा जा सकता है कि प्रसार कार्यों का ग्रामीणों पर, क्या और कैसा प्रभाव (impact) पड़ेगा और उनमें कितना परिवर्त्तन और विकास ला सकना संभव है ।

(8) ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीणों की वर्तमान सामाजिक स्थिति का अध्ययन करता है । प्रसार शिक्षा इसी को आधार मानकर आगे बढ़ती है कि जो वर्त्तमान स्थिति है वह कितनी असंतोषजनक है और उसको उन्नत करने के लिए, और क्या-क्या करना चाहिए ।

(9) ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्रामीण रीति-रिवाजों और प्रथाओं, रूढ़ियों और परम्पराओं, धार्मिक विश्वासों, अंधविश्वासों और पुराने समय से चली आ रही आस्थाओं का अध्ययन करता है । प्रसार शिक्षा अपने कार्यक्रमों को ऐसा रूप देती है कि इन सबको ठेस पहुँचाए बिना, कैसे इनमें परिवर्त्तन लाया जाय और कैसे अहितकारी धारणाओं को सर्व हितकारी बातों में बदला जाए ।

(10) ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण संगठनों का तथा उनके ग्रामीण जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करता है । प्रसार शिक्षा, ग्रामीण जीवन को उन्नत बनाने में, इसी धारणा के आधार पर, इनका सहयोग प्राप्त करती है और इन सम्मिलित प्रयासों से, अपने कार्यक्रमों को मजबूत और प्रभावशाली बनाती है और सफलता की ओर अग्रसर होती है ।

Scanned with CamScanner